बगवार

बगवार

रामेश्वर प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BAGWAR

A Maithili Kavyadhara by Sh. Rameshwar Prasad Mandal

ISBN :
दाम : 350/- (भा.रू.)
सर्वाधिकार © लेखक (श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डल)
प्रथम संस्करण : 2023

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार : 847452
अक्षर संयोजन : सुश्री पल्लवी मण्डल
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

भूमिका-

ऐठामसँ

अप्पन बात

काव्य

पहिल पड़ाव

प्रथम करै छी गौरी-सुत वन्दन
विघ्न विनाशक कृपा निकन्दन
दोसर शारदा ज्ञान निकन्दन
विद्या वारदा माँ भक्त निकन्दन
तेसर अप्पन गुरुवर पद-पंकज
दइ छैथ जे अशिष निकन्दन
लिखै छी हम जिनगीक धारा
कथा समुन्दरक ज्वार आ भाटा।

देखलौं हम सुन्नर एक घर
माटिक खम्भा आ बाँसक छड़
माटिक भीत आ माटियेक दुआर
बाँसक खिड़की छल चारू कतार
तिलै-काठक आ बाँसक ठाठ
लोकैत छल जाफरी चारूकात
बाँसक कैमचाक छल अलग बहार
आ रचल-खचल लत्ती फूलक समान
दू कोठलीक अलंकृत घर
मजदूर-किसानक माटियेक घर।

घरवारी छल बड़ होशियार
कमाए-खटाए कऽ घर केलैन तैयार
जीवन ओकर आनन्दसँ बितल
हँसी-खुशी आ सुखसँ बितल।।
ओकरा एगो बेटा भेल
नाओं ओकर जगू पड़ि गेल
जगू रहए बड़ दुलार
माए-बाबू लुटौलैन सिनेह हजार।

रंगपुरमे जगू केर गाम
दुनू परानी रहए ओइठाम
माए-बापक सेवामे रहि
ओकरे बुझैत छल ओ पुण्य धाम।

एक दिन विधाता भऽ गेल वाम
माएबाप चलि गेल स्वर्ग धाम
घर गृहस्तीक किछु नइ ज्ञान
ई की भेल आब हे भगवान.!

जगू बड़ आब घबड़ा गेल
कानैत-कानैत मुर्छित भेल

पत्नियोक देह झांझर भेल
हाय विधाता! सभ किछु गेल।

सर-समाज अँगना आबि गेल
सभ सम्हारि जगूकेँ लऽ गेल
दवाइ-पानि चढ़ौल गेल
जगूक आँखि तँ खुजिये गेल।

लोक बाजल,
“हौ जगू, तूँ धीरज धरह
अपना पत्नियोकेँ समझाबह
खेत-पथार घर-आँगन देखह
बच्चा जकाँ जुनि तूँ कानह।”

मृत्यु तँ ध्रुव सत्य छी
ई केकरो नहि छोड़ैत अछि
मरब-जीयब सृष्टिक नियम छी
सभ कालमे लोक बजैत अछि।

“तोहीं कहह केहेन मृत्यु भेलह
एक्के संग दुनू परानी गेलह
बिना कष्ट आ दवाइ-दारूक
अचानक स्वर्गवास चलि गेलह।

बौआ तूँ हिम्मत करह
आ अपना पत्नियोकेँ बुझावह
घर गिरहस्तीकेँ सम्हारह

नवका जीवनकेँ सजावह।”

छोट रूमालसँ नोर पोछलक
जगू आब साहस केलक
कनियाँक अँचरा भींजल
गरम नोरसँ धरतियो भींजल।
दुनू परानी आब संतोष केलक
माए-बाबूक दाह-संस्कार केलक
छी नारी तँ पुरुखक मंतरी
मित्र-सहचरी आ घरक संतरी।

जगूक नवजीवन-

दुनू परानी केलक विचार
घर-गिरहस्तीपर देलक धियान
वारी-झाड़ी सभ ठीक केलक
बाँसक टाट चहुवगली लगेलक।

तामि-कोरिकऽ खेत बनौलक
जगू तीमन-तरकारी उपजौलक
बारी-झाड़ी आमक गाछी
फल-फलहरीक बाग लगौलक।

घरक आगू डबरा-डबरी
जइमे डुबैत छल सात हाथक लकड़ी

डबरो छल एतेक गहरी
डूबल केतेको बकरा-बकरी।

जगूक मोनमे आएल विचार
किएक ने करू माछक बेपार
बड़ नीक पैसा आ बड़ नीक काम
दुनू परानीकेँ भेटत आराम।

सिंगही-मुंगरी, रौह आ नैनी
सौरा-भाकुर गरै आ गरचुनी
रंग-रंगक माछक पालन
जगूक नजैरो छल बड़ पैनी।

टेङ्गरा, पोठी, बुआरी आ भुन्ना
कबै, छही, गैंची आ भुल्ला
ढल्लै, काँटी सिलभर आ रेबा
दरही गगरी कुरी आ डेढ़बा।

कोमल काँट, रूपचन आ लट्टा
इचना, लोदरा, विकेट आ बचा
मारा-मरोरक जीरा सस्ता
माछक पालन करब हम अच्छा।

जगू छल मजदूर-बोनिहार
मुदा भेल छल बड़ होशियार

लोकक काजक उठबै छल भार
मधुरभाषी आ छल मिलनसार।

समयक पाँखि फड़फड़ाइत गेल अगारी
जगूक कनियाँक पैर भेल भारी
प्रथम कोखिमे बेटा भेल
घर-अँगनामे खुशी भरि गेल।

रोशनी आ जगूक पहिल सन्तान
रूप खिलल छल जेना चान
कहलक नर्स-आशा जगू बौआ
बड़ भागवन्त छी करू दान।

ढोल बाजल तासा बाजल
पिपही आ मिरदंग बाजल
दाइ-माइ आ स्त्रीगण मुखसँ
छठियारक मंगल गीत गाएल।

तही बखत नाना आबि गेल
हरखित मनसँ आशीष देल
बौआ केर नाओं पड़ि गेल
'वेद प्रकाश' कहि शुभकामना देल।

जगू बाँटलक पान-सुपारी
चना-चावल मीठ सोहारी

रोशनियो बाँटलक भरि मन साड़ी
खुश भेली समाजक सभ नारी।

समय आनन्दसँ बितैत गेल
डबरा-डुबरीमे माछ भरि गेल
जगतपुरक बेपारी आबि गेल
सभ माछ खरिदने गेल।

जगूक सभ गाछो फड़ि गेल
बाग-बगीचा सभ भरि गेल
देव-देवीक महिमा घुमि गेल
फेर रोशनी गर्भवती भेल।

बेटीक जन्म-

दोसर बच्चा भेल लड़की
लड़का-लड़कीमे फरक की?
एक्के मालिककेँ ई सृष्टि
अइ लेल समाजमे रूदन की?

फूलकेँ शूल समाज बुझैए
काँटसँ बेसी सिनेह लगबैए
निमनकेँ अधलाह बुझैए
कर्कशकेँ कर्णप्रिय बुझैए।

यौ समाज, कनी रूकू ऐठाम
सृष्टिपर विचारू ऐठाम
नारीक बिनु सृजन केना ऐठाम
नारी नहि तँ पुरुख केना ऐठाम।

रोशनीकेँ जे बेटी भेल
स्त्रीगणक मुँह विधुआ गेल
पड़ोसिन कहलक धू बेटीए भेल
रोशनी-जगूक दुख बढ़ि गेल।

जगू कहलक, “हे यै काकी
हम सभसँ मंगै छी माफी
बेटाकेँ स्कूल भेजै छी
बेटीसँ बकरी चरबै छी।”

कारण यएह जे मान भेटैए
बालककेँ सम्मान भेटैए
बालिका शिक्षाक दीप मिझैए
जीवन-नैया ओकरा डुबैए।

सावित्री ज्योतिवा बाई फूले
प्रथम शिक्षिका नारी मूले
काका यौ, भारतीजीक शास्त्रार्थ किए भुललिऐ
गार्गी, मैत्रियीक विद्वता किए भुलेलिऐ।

लड़कीमे सरस्वतीक गुण
मनमे किएक अछि गुन-धुन
लक्ष्मी आ दूर्गा केर गुण
लड़कीमे तँ गुणे-गुण।

“बाबा यौ, भ्रूण-हत्याक पाप करै छी
बेटीकेँ किएक अभिशाप बुझै छी?
केना भेटत सीता आ सावित्री?
सुकन्याक जखन गल्ला घोंटै छी।”

“काका आबू काकी आबू
भैया हमर लाल बुझक्कैर
भौजी आबू आ मैया आबू
बालिका शिक्षाक मसाल जराबू।”

छठियारक आब शुभ दिन आएल
अँगनामे फेर बधैया बाजल
जगू कोनो कमी नइ केलक
दाइ-माइकेँ मनवा भावल।

बासमती चाउरक गम-गम भात
अपना डबरा-डुबरीक माछ
गाजर, टमाटर नेमो आ पिऔज
हरियर खीरा आ चुकुन्दरक सलाद।

तइक ऊपर दही देल
बोकटे-बोकटे चिन्नियो देल
हरियरल मरचाइ आ नूनक मेल
अँचार देखि सभ हरखित भेल।

मौधकर नाना उपस्थित भेल
नानी बच्चीकेँ गोदमे लेल
बेटी रहै गोर अदक्का
नाओं रखलैन ओकर चन्दा।

माछक चोइर-

एक राति किछु चोर उच्चका
जाल गिरेलक जगू केर खन्ता
ओकर माछ सभ मारि लऽ गेल
जखन भुरुकबा ऊपर गेल।

कुत्ता भूकल आएल चोर
उठू यौ मालिक, भेल आब भोर
उठल जगू तँ केलक शोर
दुनू आँखिसँ झहरल नोर।

गाम भरि जगू पनचैती केलक
सभ पंचपर भरोसा केलक
मुदा ओकरा इंसाफ नइ भेटल

चोरसँ पंच माछक घूस लेलक।

जगू आब बेमार पड़ि गेल
पत्नी कहलैन ई की भेल
राति-दिन मनसँ सेवा केलैन
पत्नी-धर्मक निर्वाह केलैन।

पत्नीक सेवासँ ओ चंगा भेल
उठिकऽ बेटा-बेटी लग गेल
दुनूक मुँहक छबि निहारिकऽ
घरक हाल देखि व्याकुल भऽ गेल।

जगूक आँखि तँ डबडबा गेल
संगे, गरीबीसँ डेराए गेल
पत्नीसँ कहलक हम बाहर जाएब
अपना किस्मतकेँ अजमाएब।

मांगलिक यात्रा-

एक दिन जगू गुलाठी गेल
चूड़ी-फैक्ट्रीमे नौकरी मिलि गेल
मिडिल पासक माँग छल ओइमे
नीक नम्बरसँ पास छल भेल।

पाँच हजार रूपैआ प्रति माह

वेतन भेटत माहे-माह
मुदा समयपर टाका भेटत
कम्पनीमे सभ सुविधा भेटत।

चिट्ठी लऽ कऽ जगू घर आएल
पत्नीकेँ सभ हाल सुनाएल
रोशनीक दिलमे खुशी समाएल
घर-परिवारक भाग्य घुमि आएल।

जखन किछु बरख बित गेल
जगूक फैक्ट्रीमे छुट्टी भेल
गरमी ओइ साल बड़ बढ़ि गेल
धरती धीपिकऽ ताबा भेल।

कारखानामे धूआँ भरि गेल
वायु-प्रदूषणक खतरा बढ़ि गेल
पास-पड़ोसमे चिन्ता भेल
आ फैक्ट्रीमे छुट्टी भऽ गेल।

जौंआँ बच्चाक जन्म-

एहेन कृपा केलैन भगवती
रोशनी फेरो भेल गर्ववती
एक दिन रोशनी खेलैन खीर
ओकरा पेटमे भेलैन पीड़।

बढ़ल दर्द तँ जगू घबड़ाएल
दाइ-माइ सुनि आँगन आएल
आशा कर्ता वैद्य बुलाएल
सभ मिलिकऽ रोशनीकेँ समझाएल।

रोशनी देलैन जौंआँ बच्चा
झूठ नइ हम बजै छी सच्चा
लोक कहलक ई की भेल?
भगवानक ई अजगूत खेल।

पढ़ल-लिखल कम छल लोक
तँए एकरा कहलक बकलेल
गाममे घटना ई प्रथम भेल
जगूक अँगनामे मेला लगि गेल।

बजली किछु महिला, 'माइ गे माइ'
आ किछु बजली, 'दाइ गे दाइ'
देखलौं नइ कहियो एहेन लुगाय
आब की हेतै एकर उपाय।

कहलक गुरुजी धत् ई की शोक
किएक मारै छी हिनकेपर चोट
ई तँ छी विज्ञानक दोष
हँसु-हँसु जुनि करियौ रोष।

अण्डाशयसँ अण्डा बिखरल
दू फाँक भऽ कऽ ओ निखरल
दुनू फाँक दूटा भ्रूण बनौलक
तइसँ दूटा शिशु सजौलक।

आब सभकियो मिलि देलैन धियान
दुनू बच्चा बेटे प्रमाण
आशा जखन सभ भेद बतौलक
दुनू परानी संतोख केलक।

समय बितल छठियार आएल
स्त्रीगणक मन मधुराएल
एगोमे दुनू तँ लुटबैए टक्का
दूगो भेलपर मारत धक्का।

दुनू परानीक मन भरि गेल
सभकेँ धोती-साड़ी देल
पूरी-जिलेबी आ खियौलक बुनिया
संगमे रसगुल्ला बढ़ियाँ-बढ़ियाँ।

दुनू शिशुकेँ सभ आशीष देल
कहलैन सभ बड़ चिकन भेल
एक केर देव दोसर केर निलेश
नाओं नीक आ निमन सन्देश।

दिन दुगुनी तँ राति चौगुनी
दुतियाक चान जकाँ बढ़ैत गेल
के अगुआएल आ के पछुआएल
ईहो कहनाइ तँ मुश्किल भेल।

बेटा-बेटीमे कोनो नहि अन्तर
छल नहि दुनू परानीक अभ्यन्तर
बेटासँ बढ़ि बेटी-शिक्षापर
धियान दुनू लगबै छल सदिखन-सगतर।

उपराग-

उपराग दइ छी यौ समाजक लोक
दू रंगी नीति किएक बनबै छी?
बेटाकेँ जन्मपर खुशी मनबै छी
बेटी जन्मपर किए नोर गिरबै छी।

बेटाकेँ खेलैले साए-साए खेलौना
बेटीकेँ किएक एगो चुसना चुसबै छी
उपराग हम दइ छी यौ समाजक लोक।

बेटाकेँ पढ़ैले इस्कूल भेजै छी
बेटीसँ किए बकरी चरबै छी
धिया ओनाइत अछि चुल्हीक धूआँमे

बेटा किए खेलाइए फूलबगियामे।

बेटाक लेल किताब-कलम खरीदै छी
बेटीक हाथमे किएक छिटा-खुरपी धरबै छी
बेटा शिक्षाकेँ अहाँ दीप जरबै छी
बेटी शिक्षाकेँ किए दीप मुझबै छी?

बेटाक जन्मपर बधैया बजबै छी
बेटी जन्मपर किए सिर झुकबै छी?
बेटाक बिआहमे मुरेठा बान्है छी
बेटी बिआहमे किए पगड़ी खसबै छी?
हम दइ छी उपराग यौ समाजक लोक। ❑

दोसर पड़ाव

रंगपुरमे रहै छल दोसर परिवार
फुसनी मड़रक सम्पन्न परिवार
ओकरा रहै अप्पन बेपार
जुइतगर रहै आ बड़ होशियार।
कोठा-सोफा झलकै सदिखन
मेहनतक माटि लौकै हरदम
नारक पैघ-पैघ दसटा टाल
ओइसँ छोट पुआरक टाल।

लक्ष्मी छल मुदा सरस्वती नहि
छल धन-सेर-टक्का शिक्षा नहि
लक्ष्मीजी कैँ मनाबै छल
सरस्वतीजी कैँ कनाबै छल।

धिया-पुता स्कूल नइ देखलक
लाठी लऽ कऽ गाए-महींस चरेलक
फुसनीकैँ एगो बेटा भेल
ओहो ओइ रंगमे रंगि गेल।

फुसनी एकबेर जगूक घर गेल
दुनू परानीकैँ आशीष देल

कहलक जगूसँ आब जमीन बढ़ावह
धिया-पुताकेँ जुनि पढ़ावह।

हमरा देखियो टाल-पर-टाल
अन्न-धन-लक्ष्मी आ माल-जाल
सालो भरि दौनी होइत अछि
जन-बोनिहारकेँ कमैनी होइत अछि।

धिया-पुता खाइत अछि घी-मलीदा
खेलैत-खेलैत बनि जाइए खलीफा
पढ़ाइ-लिखाइक कहह की हेतह?
पैसा जेतह आ किच्छो ने हेतह।

कहलक जगू 'सुनह हौ काका,
बिनु पढ़ल तँ जानवर जकाँ
से तँ कहलैन गाँधी बाबा
अनपढ़ बनि कहियो ने रहना'।

'अक्षर थिक बेटीक गहना
साक्षर बनिकर सभकियो रहना
समग्र विकास आनैत अछि शिक्षा
उचित-अनुचित बुझबैत अछि शिक्षा'।

समय फुर्र-फुर्र उड़िते गेल
जगूक धिया-पुता सुशिक्षित भेल

वेद आ चन्दा स्नातक कएल
जगू कहलक 'बड़ निमल भेल'।

चन्दाक बिआह-

रोशनी बजली चन्दा लेल
बेटी आब तँ सियानी भेल
बुधि-विवेकसँ पूरित भेल
हमर चन्दा बिआह जोग भेल।

जगू बाजल कहलौं नीक बात
मुदा हमर छल आरो किछु आश
धी-बेटी करैत एम.एम. पास
तखन करितौं बिआहक बात।

तखन झट कहलैन रोशनी प्यारी
सभ दिन कुहकै ने कोयल रानी
मनुक्खोसँ भूल होइछ एकबेर
जीवनमे वसन्त तहिना एकबेर।

जगू वरक खोजमे चलि गेल
सुन्दर एकटा वर भेटि गेल
धन-सम्पैत छल सोनाक भण्डार
मुदा एको अक्षरक नइ ज्ञान।

जगू गुनधुनमे पड़ि गेल
कल्पनाक सागरमे डुमि गेल
बेटी हमर अछि स्नातक पास
वर बुझू छिलैत अछि घास।

ओइठामसँ आगू बढ़ि गेल
दोसर वर जे ओकरा भेटि गेल
ओ वर छल तँ स्नातक पास
मुदा एको कौड़ियो ने रहै पास।

लोक कहलैन अछि लड़िका होशियार
गुनगर-सुहनगर आ मिलनसार
प्रतिभावान आ अछि बुद्धियार
भेटल छैन ओकरा केतेको पुरस्कार।

गुनधुनमे जगू एक बारा
अपना मनमे किया विचारा।
एक तरफ छेदाम नइ टाका
दूजे ओर स्वर्णक भण्डारा।
एक तरफ अक्षरोक नइ आधारा
दूजे ओर अछि ज्ञान-भण्डारा।
टूअरक तँ सुन्दर बेवहारा
अछि आओर भविस उजियारा।

जगू घुमिकऽ अँगना आबि गेल

रोशनी पुछलक कहू की भेल?
पत्नियोकेँ सभ बात कहि देल
रोशनीक मनमे हुदहुदी पसि गेल।

रोशनी मनमे केलैन विचार
नारीकेँ गहने अछि संसार
धन-दौलत आ मोटरकार
वर होइ कनाह वा असंस्कार।

जगू बुझबैत बजला-
'मनुक्खक लेल मनुक्खक फुलवारी
फूलत जइमे शौरभ सुज्ञानी
फड़त नित्य शिक्षित संस्कारी
सपुत नहि तँ धनक की रखवारी?'

रोशनी बुझि-समैझ बजली-
यएह आब हमरो भेल विचार
आ झट-दे ऐपर करू विचार
लड़िका करू जे अछि स्नातक पास
आ धन-सम्पतिक छोड़ू आस।

बिआह केर नीक ओरियान भेल
चन्दा बेटी दुल्हिन बनि गेल
सखी कहलैन सुन्दर वर मिलि गेल
कर्तव्य-फर्ज लेल पति घर गेल।

चन्दा ओइठाम फेर जगू गेल
दूटा घर आ शौचालय बनबा देल
घुरैत काल शुभ आशीष देल
रूसल जमाएकेँ साइकिलो देल।

समयक रथ आगू बढ़ि गेल
वेद प्रकाशकेँ नौकरी भेटि गेल
गाम-समाजमे खुशी बढ़ि गेल
सुजुकी कम्पनीमे भर्ती भेल।

किछु बरख जखन बीति गेल
देव कुमार स्नातक भेल
टाटा कम्पनीमे जोगार लगि गेल
नीक बुझि भरती भऽ गेल।

गाममे जगूक मान बढ़ि गेल
जगू आब फर्शसँ अर्शपर गेल
आनन्दक सरिता कल-कल भेल
ओकर गिनती अमीरमे भेल।

खुशीमे दुनू बाँटलक धोती-साड़ी
हरखित भेल गामक नर-नारी
प्रसाद बनल छल सेबइ-बुनियाँ
आओर बनल छल घी-सुजीक हलुआ।

भरि पेट भोजन आ भरि हाथ दान
सभकेँ केलैन मान-सम्मान
भीख-भिखारीन दुखियो खेलक
जाइत काल सभ जय-जय केलक।

समैयक पंछी उड़ान भरैत गेल
रोशनीक अँगनामे शुभ विवाह भेल
शुभ मुहूर्त्तमे शहनाइ बाजल
दुल्हिन सभकेँ नुपुर बाजल।

वेद प्रकाशक वीणा मन भाएल
शकली देवकुमार लेल आएल
सीता-स्वयंवर जकाँ बनौलक
बिआहक गीत सभ नारी गौलक।

एक मड़बापर दू-दू बिआह
बुद्धिजीवी ऐपर करू विचार
रोशनीक मनसा पूरा भेल
जगूकेँ दूगो पुतोहु आबि गेल।

जगू छल कर्मक पुजारी
समाजसेवी आ छल उपकारी
‘करम करब तँ मिलत मेवा
की पूजा आ की सेवा?’

सभसँ छोट निलेश कुमार
मुदा पढ़ैमे सभसँ होशियार
सभ मिलि-जुलिकऽ देलक धियान
ओकरो बनौलक तेज-गुणवान।

समय पखेरू उड़ैत गेल
जगूक ओइठाम सगुन भेल
निलेश कुमार बी.डी.ओ. बनि गेल
गाम-टोलमे जयकार भेल।

अँगनामे उगल इजोरियाक चान
चकमक करए दुआर-बयान
पंचलाइटक मेंटल जखने तेज भेल
कहलैन सभ आब सुन्दर भेल।

झुमि-झुमि नारी गाबए गीत
अँगना-बाहर गूंजे संगीत
लोक मस्तीमे छल-तल्लीन
भोज-भात चलल सातो दिन।

गरीब-अनाथ भेल तर-बतर
'भिख मंगो' खेलक सभ डटकर
कहलक मालिक ई काज बड़ सुन्दर
दीनानाथ अहीं छी, बसुन्धरापर।

जगूजीक अँगना फुसनी गेल
कानैत-कानैत आँखि अन्हराए गेल
जगूजी बाजल, ई की भेल?
एना तँ काका कहियो ने भेल।

फुसनी बाजल, बड़ गड़बड़ भेल
बेटा हमर नशाबाज बनि गेल
जर-जमीन बेचि दिल्ली परा गेल
बेश्यासँ बिआह करि लेल।

हम्मर इज्जत माटिमे मिलि गेल
भरल तिजोरियो सभ लऽ गेल
एहेन दिन हमर आबि गेल
टाल-पुआर सभ किछु बिक गेल।

धिया-पुताक अहारे छीन लेल
कानि-खीज कऽ सुति-परि गेल
कहह तोहीं आब की नइ भेल
धन आ धरमो चलि गेल।

दोहा-
लक्ष्मी होइत अछि दसदुआरी रहत न एक जगह थीर
धनसँ घमण्ड नहि करब अहाँ धन नहि रहत सभदिन।

की लंकापति रावणक स्वर्ण लंका रहल?
आ की ओकर वीर सन्ताने रहल?
ओकरा तँ रहै प्रभुताक घमण्ड
धन्य-धान्य आ वीरताक घमण्ड।

ओकरा रहै मेघनाद सन बेटा
जे मेघ गर्जन करै छेलइ
इन्द्रजीत ओकरे दोसर नाम
जे इन्द्रकेँ हरबै छेलइ।

एकसँ बढ़िकऽ एक वीर योद्धा
रावणक राजमे बसै छेलइ
मायावरी राक्षस-राक्षसनीक
शक्ति बल सभ भेटै छेलइ।

तइ रावणकेँ रहै वीर बेटाक घमण्ड
अओर रहै माया शक्तिक घमण्ड
आर घमण्ड एक बड़ छल ओकरा
फलक राजा आमक घमण्ड।

नमगर चौरगर बाग फड़ल छल
रक्षक वीर अक्षय कुमारक घमण्ड
आएल वीर हनुमान तँ उजारलक बाग
अक्षय कुमारकेँ भेजलक सुरधाम।

क्षणेमे सोनाक लंका जरोलक
आ रावणकेँ सभ घमण्ड तोड़ौलक।।

बजल जगूजी सुनह हौ काका
दइ छी अहाँकेँ हजारो टाका
की कहने छेलौं हम यौ काका
अनपढ़ घरमे हजारो धक्का।

पैसा लएह जा नाम लिखाबह
धिया-पुताक स्कूल पढ़ाबह
पढ़ल-लिखल केर बात किछु भिन्न
इजोरिये-इजोरिये राति आ दिन।

शिक्षितक अँगनामे आमक गाछ
अशिक्षित लगबैत अछि बगुरक गाछ
जेहेन गाछ अछि तेहने फड़
बगुरसँ काट तँ आम मीठगर।

किछु बरख आरो सुखसँ बित गेल
जगूजीक अँगनामे दुख पसैर गेल
पत्नी ओकर बीमार पड़ि गेल
झट-पट लऽ कऽ डॉक्टरी गेल।

जगूक विनती आ प्रार्थना-

दोहा-
दुर्गादुर्गति दूर कऽ दिअ, विनती करै छी करजोरि
पत्नी हमर बेराम अछि, आँखिसँ झहरैए नोर।

कहलैन डागडर ई केना भेल?
रोगीक आबि गेल चलैक बेर
जगू धेलक पैर डागडर केर
कहुनाकऽ जान बचाबियौ ऐबेर।

डागडर फेर लगौलक अल्ला
देखलक छाती देखलक गल्ला
कहलक सुनह हौ जगू बौआ
तेरह लाखक खर्च छह बौआ।

जगूकेँ आब भरोसा भेल
आँखिक नोर तँ अस्थिर भेल
डागडर बाबू भरती लिअ
हमरासँ सभ टाका लिअ।

रोशनी तँ ओइठाम भरती भेल
जगूक मन पुन: हरखित भेल
बेटा सभकेँ खबर भेज देल
सुनिते सभ बेटा आबि गेल।

जगूजी सभसँ केलैन आश

मुदा सभ देलैन पाँचे लाख
कहलक बेटासँ आब कोन उपाय
अखन हएत के हमर सहाय।

खुलिकऽ जगूक मदैत नहि भेल
सभ आशापर पानि पड़ि गेल
कहलक जगू सुनह हौ बौआ
माइक जान बँचाबह हौ बौआ।

बेटा-पुतोहुकेँ कोनो असर नहि भेल
एक्के रंगमे सभ रंगा गेल
शकली फुलिकऽ तुम्मा भेल
कहलैन, यएह मदद बड़ भेल।

अहाँ स्वतंत्र छी करू उपाय
आब भगवाने हेता सहाय
नइ मारब माछ नइ उपछब खत्ता
हमसभ रहब बरू अपने हत्ता।

पुतोहुक बात सुनि बड़ दुख भेल
जगू तँ अप्पन माथ पीट लेल
किछु काल अवाक रहि गेल
बेटा-पुतोहु कोठरी घुसि गेल।

चिड़ैक जोड़ी रहै गाछपर

नीचा एक व्योधा आएल
धनुष डोर चढ़ौने टुटल
कर्र-कर्र शोरसँ दुनू उड़ि भागल।

पुन: जगू निराश भऽ गेल
घर बन्हकी राखि कर्जा लेल
पाँच लाख कर्जा आबि गेल
मुदा रोशनी ठीक भऽ गेल।

गरज हुअ तँ करजा लिअ
करजा ऊपर करू विचार
करजा बढ़त साँप बनि जाएत
छिप-छिप कऽ करत शिकार।

जगूक अवकाश-

किछु मास जखन बित गेल
कम्पनीसँ चिट्ठी आबि गेल
आब रिटायर जगू भऽ गेल
ओकर आँखि पुन: नोरा गेल।

चिट्ठी जखन बेटा लग गेल
पढ़िकऽ पुतोहु सभ तुम्मा भेल
शकली बैग उठौने गेल
बेटा-पुतोहु विदा भऽ गेल।

मुदा माए रोकैत अछि-
एक बागक सभ फूल फुलाएल
एक्के मालि ई बाग सजाएल
रहत केना बिनु फूलक मालि
जीब गेलौं पुन: मरब हम मानि।

जगू कहलक रूकह हौ बौआ
सभसँ बढ़िकऽ की रूपैआ?
मनुक्ख बनह भगवान सहैया
संग रहह सभ देव खेबैआ।

शकली पुतोहु बाजि उठल-
'ससुर जी घर गेल नोकरी गेल
की रहल आब अहाँक पास?
जे कियो आब ऐठाम रहत
छीलए पड़तै ओकरा घास'।

माए-बापकेँ छोड़ि सभ चलि गेल जगूक
आँखिसँ दहो-बहो नोर गिरैत अछि,
तखने ओकर पत्नी अपना अँचरासँ नोर पोछैत बजल-

'सुख-दुखसँ बनैत अछि जीवन
धूप-छाँहक खेल छी जीवन
बिपैतसँ जे डरि जाइत अछि

बुझियौ ओकर लाश भेल जीवन’।

जगू पुन: हिम्मत केलक
आगू लेल संकल्प केलक
पत्नीपर भरोसा केलक
दुनू परानी बुधि लगौलक।

रोशनी चलौलक काठक जत्ता
गहुम पीस-पीस बनौलक आँटा
घर-घर जा कऽ आँटा बनौती
साँझूपहर घुमि अँगना औती।

भैया हौ बौआ हौ, जीवनक ई धूल-खेल हो-
जखन धन-बित रहतह तोरा
सर-समाज सभ हेतह तोरा
धन घटतह तँ लोको घटतह
सभ कियो छोड़ि देतह तोरा।

जगूओ दिन भरि करता काज
मील-मालिक ने देथिन आराम
छोटका बोड़ा आ बड़का बोड़ा
बोझ उठाएब रहैन काज।

वेदक पत्नी वीणा कुमारी
शीलवती-गुणवती बेवहारी

सासु-ससुरपर रखथिन धियान
पैसा-कौड़ी भेजथिन पान।

रोशनी-जगू छल कुबेर सन जोड़ी
आब जोड़ि रहल अछि कोड़ी-कोड़ी
जीवन पुन: पलैट गेल
ओकरा घर धन इकट्ठा भेल।

जगूक पौरुष-परीक्षा भेल
विधाता ओकर पुन: वाम भेल
पीठपर बोड़ा जगू उठौलक
मीलसँ बाहर छल्ली लगौलक।

जगू पुन: बोड़ा लाबए गेल
आबैत काल रोडपर गिर गेल
नीचा जगू ऊपर बोड़ा
वायुक दबाव सेहो बढ़ि गेल।

देह-गातसँ खून बहि गेल
माथा ओकर सेहो फूटि गेल
जगू-के लगमे कियो ने गेल
बाट-बटोही घूमि चलि गेल।

वएह जगू आ वएह बेवहार
हुनका अँगनामे लगै छल दरबार

कियो मांगै रूपैआ कियो मांगै धान
दुनू परानी राखै छल सभक मान।

प्राण ओकर आब निकलल जाइ
बढ़ैत दर्द अंग-अंगमे समाय
छड़पटाइत-छड़पटाइत भेल बेहोश
तीरसँ बेधल जेना खरगोश।

रोड रस्ता भऽ गेल शून
बटोही बुझलक भेल ई खून
हे प्रभू, ई की भेल भूल?
एहेन जगू भेल चकनाचूर।

तखनहि एक टेम्पू आएल
तइ संग एक युवो आएल
ड्राइवर कहलक हम नै रूकब
मरल लाशकेँ हम नै छुअब।

मुदा ओइ युवामे छल मानवता
आ सहानुभूतिक गुण, माए सन ममता
युवा ओइ गिरल वैयक्ति लग गेल
मालिक देखि अचरजमे पड़ि गेल।

ओह मालिक, ई की भेल?
कानैत-कानैत घेंघिया गेल

उठा-पुठा कऽ टेम्पूमे देल
अस्पताल जल्दी लऽ गेल।

डागडर कहलैन सुनह हौ बौआ
एकरा खून चढ़ाबह हौ बौआ।

लोटन बाजल ऐमे देर की?
ब्लड-ग्रूप मालिकक अछि की?
ब्लड-ग्रुपसँ मिलल खून
देलैन लोटन अप्पन देहक खून
मालिककेँ आब आएल होश
ओकरा लागि गेल चकबिदौर।

जगू बाजल हौ लोटन बौआ
किएक जान बँचेलौं यौ बौआ
हमरा लेल अहीं भगवान
रक्षा करथिन श्री भगवान।

सभ मिलि-जुलिकऽ आनलक घर
पत्नीकेँ लगल बकजर
कानल-खीजल ई की भेल?
हे विधाता, केतेक दुख देब।

लोटन बच्चा बात बुझाबह
मालिककेँ सभ हाल सुनाबह

मालिकपर बिपैत छह नमहर
धिया-पुता आ नइ कियो हितगर।

रोशनी कानल जगू कानल
लोटन तँए दुगुना कानल
सभ बात लोटन बुझि गेल
नारी सोभावे रोशनी कहि देल।

दोहा-
बिपैत असगर नहि अबैत अछि सुनहु सकल सुजान
घर टुटत आ हर टुटल तँ बगिया होइत सूनशान।

लोटन बाजल सुनू यौ मालिक
अहीं सबहक सहयोगसँ हम
शिक्षाक महिमा जानलौं यौ मालिक
दरोगामे पास भेलौं यौ मालिक।

एक हीरा तँ दोसर छी मोती
मुदा धिया-पुताक भेल नियत खोंटी
निमन केलौं तँ नीके फल पएब
आ ऐ धरतीपर ज्ञानी कहाएब।

कहलह तँ बौआ तूँ निमन बात
मुदा के बुझतह ऐठाम ई बात
दुनू गोटे मेहनते लगेलौं बाग

क्षणेमे धिया-पुता उजाड़लक बाग।

लोटन सम्हारिकऽ बाजल-
यौ मालिक-मालिकिन छोड़ू ई चिन्ता
नीक छी तँए नीक बनाएत विधाता
नौकरी पाबि पुन: हम आएब
अहाँ घरक हम बन्हकी छोड़ाएब।

दुनू परानी खुश भऽ कऽ बजल-
सुनू-सुनू यौ लोटन बौआ
फेर जिबैक मन होइए यौ बौआ
हमर बेटा के? अहीं छी यौ बौआ
बेटा-पुतोहु हमर ने भेल यौ बौआ।

दोहा-
नारी जँ लक्ष्मी-सरस्वती तँ धन-विद्या घरमे समाइए
नारी हएत जँ कामनी नचाबैथ नरकेँ मर्कट नाय।

दुनू पुन: आगू देखए लगल
रोशनी तेज जत्ता चलाबए लगल
दस दिनक गहुमकेँ
पाँचे दिनमे पिस-पिस पुड़ाबए लगल।

जगू पुन: नीक भऽ गेल
पत्नी घर सम्हारि लेल

जइ घरमे रोशनी रहतै
की यौ, ओइठाम अन्हरिया रहतै?

जगू पुन: किसान बनि गेल
फेर ओकरा घर आपसी भेल
आब निआरिकऽ घरपर रहि गेल
नजैर ओकर खेती दिस गेल।

केलक खेती आ साग-पातक धन्धा
फड़-फूल आ केराक धन्धा
एक तरफ छल सुन्दर धन्धा
दोसर तरफ धूरफन्दे-धूरफन्दा।

बेटा बनि गेल चोर-उचक्का
रिश्वतखोर आ बेइमान उल्लूका
देवकेँ कम्पनी छूटि गेल
घूस लैत निलेश सस्पेन भेल।

वेदक अँगना सभ घुसि गेल
ओकर मोटरी भारी भऽ गेल
जेहेन करनी तेहने दाम
दस नमरीकेँ यएह अंजाम।

सागक खेती-

घौका बथुआ लफक साग
जगू लगौलैन पालक साग
लाल साग कियारी-कियारी
तोरी रैंची आ गेनहारी।

सुआ-मेथी अरिकंचनक साग
गम-गम करै सरहंचीक साग
पटुआ, पोरो, खेतक खेसारी
छीट-छीटपर राजा रानी।

तहिना सबजी-फड़क बाग
तीमन-तरकारी घरक कात
रमझुगनी बैंगन आ मिरचाय
कोबी आ पतकोबी पात लगाय।

अल्लू-पियौजक बाड़ी-न्यारी
घेड़ा-झुगनी छाँही-छाँही
तहिना करैला सजमैन सीम
नीचा, बोड़ा बढ़ै नित्य दिन।

खीरा, मुरै आ गाजर भिन्न
टमाटरक तँ रूप रंगीन
कदू-कुमहर तँ ढनमनाएल
तरबूज-काकैर देखि अगराइए।

सब्जी-तरकारीक तँ खेती भेल
देखैत-देखैत मशाला छुटि गेल
लहसुन सौंफपर देलैन धियान
धनिया, हल्दी आओर जमाइन।

दोहा-
साग पात आ फड़-फूल जीविकाक आधार।
तोड़ि बेचि जगू चलाबैथ अप्पन घर-परिवार।।

हरखित मनसँ बाड़ी आएल
सभ किछु जगूक मनमे भाएल
मुदा एक विधाता केर ने भाएल
ओकरापर फेर बिपैत आएल।

प्रकृतिक देलकेँ बिपैत कहियौ
दैविक परिस्थितियो बिपैत छी
मुदा मनुक्ख जँ स्वयं जाल बुनैए
की यौ, देल ई बितैत छी?

फेरो भेल रंगमे भंग
बेटा सबहक नोकरी भेल भंग
सभ बेटा रोडपर आबि गेल
राजासँ फेर रंक बनि गेल।

बेचू धनिया आ बेचू तेल

देखू भाय करमक खेल
केलैन बेइमानी लेलैन घूस
सस्पेन भेल आ गेल नोकरी छूटि।

अधला काजक अधला नतीजा
लोभीक देहकेँ चाटए कुत्ता
खबर लऽ कऽ डाक आएल दौड़
लागि गेल जगूकेँ चकविदोर।

दुनू परानीमे भेल सम्वाद
कहलैन कनिया छी किए उदास?
पुत्रक मोहमे आब जँ पड़ब
फेर अप्पन घर उजाड़ब।

पुत्रक मोहमे धृतराष्ट्र पड़ि गेल
महाभारतक बिगुल बजि गेल
हस्तिनापुर उजैड़ गेल
आ वंश-वंशक विनाश भेल।

मरलौं हम आ मरलौं अहाँ
जीलौं हम आ जीलौं अहाँ
के देखलक बिपैत आ दुखमे
बेटा-पुतोहु रहल अपने सुखमे।

दोहा-

सुखक संगी सभ होइत अछि दुखक घड़ीमे ने कोय
आमक मंजरपर कुहकै पिक चिड़ै सभ कोय।

रोशनी कानि-खीज जत्ता चलाबैथ
अप्पन दुख नहि केकरो बताबैथ
दुख सुनौलासँ हानिये होइत
बाँटैबला कियो ने होइथ।

आँखिक नोर आँटामे गिर गेल
रोशनी पिसनाइ बन्द कऽ देल
भीजल आँटा कात हटौलक
शुद्ध आँटा दिस धियान बढ़ौलक।

चिन्तासँ फेन जगू बीमार पड़ि गेल
पुत्र मोहसँ गरसित भेल
यौ जगू गीताकेँ पढ़ियौ
फुरसत अछि तँ महाभारत सुनियौ।

पुन: जगू खटियापर आएल
टुटल खटिया मनमे भाएल
मुदा जिनगीकेँ हिसाब लगाएल
नाश्ता लेनहि पत्नी लगमे आएल।

मरूआ रोटी खट-खट कारी
गरीबक लेल यएह सुहारी

पियौज आमिलक चटनी चहटगर
हरियर मेरचाय नून छल उज्जर।

चिट्ठीक बात-

तही बखत एक डाकपिन आएल
जगूक हाथमे चिट्ठी थम्हाएल
चिट्ठी छल ओकरे ऑफिसक
चूड़ी उद्योग गुलाठी कम्पनीक।

सेवामे जगू पूर्व सुपरवाइजर
ग्राम+पोस्ट रंगपुर लिखाएल
भाया- धर्मपुर जिला मधुबनी
ओइमे लिखल छल सुनरवयनी।

फूल अस्कीम पेंशनक सूचना
कम्पनी भेजलैन स्टाफक पवना
चिट्ठीमे रहै पेंशनक बात
जगूकेँ भेटल सोलह लाख।

खबर पढ़ि जगू बड़ खुश भेल
तइसँ दूना पत्नी भेल
कम्पनीकेँ केलैन गुनगान
हरखित मनसँ मंगल गान।

12 जुलाई-के कम्पनी बजौलैन
कागत-पत्तर सेहो मांगलैन
जाति प्रमाण पत्रक छल खगता
रहैन आओर निवासक खगता।

पत्नी जगूक बड़ होशियारि
काबिल चतुर आ छल बुधियारि
समयसँ पहिने कागत बनौलक
आ सभ प्रमाण-पत्रकेँ जुटौलक।

नारी पत्नीसँ बढ़िकऽ मित्र
सलाहकारणीमे रहत प्रवीण
नारी रखैत अछि घरक मान
पुरुखक मर्यादा आ कुलक शान।

छी ग्यारह जुलाई केर रातिक बात
दुनू परानी जागि केलैन परात
जगूक मनमे विचार भरल छल
कखनौं कटही गाड़ीपर
तँ कखनौं जहाजसँ उड़ै छल।

बारह जुलाई केर भिनसरमे
खग-चिड़ै केर कलरवमे
मोटरी-बैग तैयार केलैन
रोशनी पतिक हाथमे देलैन।

रेलगाड़ी साँय-साँय बढ़ैत गेल
जगूक भाग्य जगबैत गेल
जखन आएल जगू अप्पन फैक्टरी
स्वागत केलैन तखने कम्पनी।

कम्पनी पुछलखिन दू-चारि सवाल
देलखिन अतिशय सुन्नर जवाब
जगूक लेल सभ जवाब छल सम्भव
छेलैन हुनका नमहर अनुभव।

रूपैआ लऽ कऽ घुरि घर आएल
गाम-घरमे खुशी समाएल
कहलैन लोक ई छल इंतिहान-परीक्षा
पुरुख-परीक्षा आ धर्मक परीक्षा।

दुनू परानी जगू खुशहाल भेल
मुदा धिया-पुताक हाल गड़बड़ भेल
हमरासँ दुख देखल नहि जाइए
कहलैन जगू रहलो नहि जाइए।

सुनिकऽ पत्नी गेली तमसाए
आ अपना पतिकेँ कहलैन बुझाए
जे मरैले हमरा छोड़ि गेल
तेकरा लेल किए ई चिन्ता भेल?

जगू बाजल-
‘हम छी एक बगियाक माली
फूल-फूलकेँ करब रखबारी
खिलैत फूल तँ उपवन गमकत
उजड़ल बागक की अछि नसीहत?’

रोशनी आब कानए लगली आ बजली-
‘हे आर्य नअ मास हम पेटमे रखलौं
अँचरामे झाँपि दूध पियेलौं
सुतैत काल हम लोरी सुनेलौं
अपना जागि धिया-पुताकेँ सुतेलौं।’

रोशनीक नोर बन्ने ने भेल-
माएकेँ आब के चिन्हैत अछि?
त्रियाक संग रहि सभ बिसरैत अछि
माइक ममता आ बाबूक दुलार
दुनियाँमे ऐ सँ बढ़िकऽ की प्यार?

श्रवण बेटा आब नइ रहि गेल
मानवसँ दानव बनि गेल
माएकेँ मारैत अछि सोंटा
पुतोहुओ नोचैत अछि झोंटा।
बेटा नइ ओकर माए कानैत अछि
की माइक दर्द बेटा-पुतोहु बुझैत अछि?

हे नाथ आएत बेटा तँ अंग लगाएब
पुतोहुओ सभकेँ हम हृदय लगाएब।

‘म’ सँ माए ‘म’सँ ममता
‘म’ सँ महि आ ‘म’ सँ मृदुलता
मिलिकऽ जे हम बाग लगाएल
तेकरा किएक हम हाथे उजाड़ब।

जेकरा वक्षमे अमृतक धार
लोचनसँ की गरल गिरत?
दूध पिआकऽ जे शिवाजी गढ़ैए
की ओइ साँचकेँ फोरि सकत?

केना मानै छी हमरे दोखी
की माएसँ ममता ससैर सकत?
शिशुमे जे देवक रूप देखैए
की ओइ पूजाकेँ बिसैर सकत?

अपना नहि सुति जे शिशुकेँ सुताबैए
की ओ गाएल लोरी बिसैर सकत?
नअ मास जेकरा ओदरमे रखली
की ओइ शिशु-जन्मकेँ बिसैर सकत?

माए बेटाक धुप-छाँह सन नाता
की रोशनीसँ छाँह निकैल सकत?

यौ नाथ, जननी आ माएकेँ कहू के पढ़लक?
ओकर कर्मकेँ बुझि सकल?
शिशु रूदनपर जे माए करूणीत होइए
ओइ माइक चरित्रकेँ के पढ़ि सकत?’

बेटा-पुतोहुकेँ आएल दुर्दिन
दिन बिताबैथ सभ गिन-गिन
संगमे कौड़ी ने जेबमे टाका
बिछैत रहै जेना झुटका-झुटका।

समय पहरुआ आँखि खोलि देल
माए-बाबू लग सभ आबि गेल
वीणा पुतोहु कहलैन कर जोरि
गोर लगैत छी माए-बाबू तोरि।

शकली बजली बड़ गलती भेल
धनक नशा हमर बुधि हरि लेल
सबहक आँखिसँ नोर गिरह
सर समाज सभकेँ बुझाबह।

जिनगी भरि लोक टका कमेलक
मुदा जगूजी तँ लोके कमेलक
जगूकेँ रहैन बड़ सपोट
संग-संग रहैन दूर तक एप्रोच।

पैरवी केलक टका देलक
सभ बच्चाकेँ अस्थिर केलक
निलेश पुन: बी.डी.ओ. बनि गेल
देवकेँ फेर नौकरी लागि गेल।

उजरल बाग पुन: हरियर भेल
दुनू परानी हरखित भेल
जूही-चमेली गमैक उठल
जेना डारि-डारि बुलबुल चहकल।

करमक महिमा कहल नै जाए
रंकसँ राजा आ राजासँ रंक बनए
ओकरा अँगनामे इजोत बरि गेल
आ दुनू परानीक औरुदा बढ़ि गेल।

खुशीमे खुशी आर बढ़ि गेल
वेद बौआकेँ बेटा भेल
स्त्रीगणक भाग्य जागि गेल
इनाम-बकशीशसँ मन भरि गेल।

बाजल मृदंग आ बाजल ढोल
जगूक आँगनमे भेल अन्घोल
चारण-भाँट केलैन गुनगान
आ सर-समाज देलैन सम्मान।

जगूकेँ एगो यार रहए
ओकर नाओ रघु मण्डल रहए
धियान आब ओकरा दिश गेल
नंगे पैर जगू दौड़ल गेल।

रघु यौ रघुऽऽ कहि हाक लगौलक
रघुक बेटा अँगनामे बजौलक
जगू कहलैन रघु छी हमर यार
लंगौटिया संगतुरिया आ जिगरी यार।

बेटा कहलैन सुनह हौ बाबू
माए-बाबू नहि रहला काबू
हुनका हम वृद्धाश्रममे पठेलौं
सभ दिससँ पिण्ड छोड़ेलौं।

जगू कहलैन बड़ केलहक गलती
तोहर मारल गेल छह मति
पिता पहाड़ तँ माए समुन्दर
ऐ देव-देवीसँ ई भू-मण्डल।

जगू झट वृद्धाश्रममे गेल
दुनू परानीकेँ ढूढिये लेल
दोस्त दोस्तिनी छल हक्का-बक्का
ने छल कौड़ी आ एक्को टक्का

दोहा-
आशरित जिनगीक बात ई, जेना परजीवी होइ
भोजनक लेल इंतजारमे; अस्थिपंजर होइ।

रघुक आँखि तँ डबडबा गेल
पत्नीक आँखिसँ नोर गिर गेल
जगू कृष्ण तँ रघु सुदामा
मित्र मिलन ई करै अचम्भा।

जगू कनैत बाजल-
सुनू नेक पुरुख आ सुन्नैर नारि
हम सभ किछु आब लेब सम्हारि
कानू नहि आ ने करू चिन्ता
सभ किछु देखि रहल छैथ विधाता।

बजली दोस्तिनी जगू भैया
चिन्तासँ हमर गलि गेल काया
धिया-पुताकेँ शिक्षा नहि भेल
संस्कार आ सदबुद्धि नहि भेल।

जगू बाजल ई चिन्ता छोड़ू
जल्दीसँ ई वृद्धाश्रम छोड़ू
गाए बनब तँ की हएत काया?
संसारक यएह छी माया।

जे खाएब हम अहूँ सभकेँ खुआएब
राति दिन सत्कार मनाएब
कमासुत अछि हमर सभ बेटा
पुतोहुओ सभमे भरल विवेका।

जगू अपना ओइठाम लऽ गेल
रोशनी बजली, बड़ नीक भेल
एक परिवार आ एक विचार
केलैन जगू दुनूक उद्धार।

दोहा-
मानवताक बाटपर जगू आगाँ भेल
दीन-दुखिया सबहक लेल बखारी खोलि देल। ❑

तेसर पड़ाव

एकटा बुढ़िया कानैत आएल
बेमारीसँ अकुलाएल आएल
बेटा-पुतोहु नहि दइ छल धियान
कानि-खीजि कऽ करै छल विहान।

जगू देखलैन बुढ़ियाक हाल
ओकरासँ बेसी भेल बेहाल
अपना मनमे केलैन विचार
दूर शहरमे भेलैन उपचार।

जगूक मनमे चिन्ता पसि गेल
बिना इलाजक केतेको मरि गेल
ओकरा भीतर डर घुसि गेल
गामक हीरा आ मोतीलाल चलि गेल।

अस्पताल खोलैक विचार आबि गेल
धिया-पुतासँ सहमति मिलि गेल
बेटा-पुतोहु सुनि बड़ खुश भेल
कहलैन ई काज अद्भुत भेल।

जगूक ई विचार चिनगारी भेल

आ गाम-घरमे पसैर गेल
ओकरा डेढ़ियापर भीड़ लागि गेल
सर-समाज आबि आशीष देल।

बुढ़-जुआन सभ हाथ बटौलैन
टीन-तेगारकेँ खूब बजौलैन
नव काज आ नव जोश
जगू केलैन एकटा नव खोज।

आगाँ आनन्द आ पाछाँ आनन्द
बीचमे आनन्द खूब सुहावन
मशीनक रफ्तारसँ काज केलैन
12 बेडक मिल अस्पताल बनौलैन।

रोशनी सदाव्रत अस्पताल रंगपुर
नाम जानि सभ भेला खुश
अपना दमपर डॉक्टर रखलैन
बेसी स्टाप गामेक रखलैन।

गरीब-लाचारकेँ मुफ्त इलाज
सबहक संग एक्के रंगक बेवहार
बेराजगारकेँ भेटलैन रोजगार
सभजन करए हुनके जय-जयकार।

दूर-दूर हल्ला मचि गेल

रंगपुरमे अस्पताल खुजि गेल
गाम-घरक इज्जत बढ़ि गेल
दुनू परानीक मान बढ़ि गेल।

राति-दिन चौबीस घन्टाक सेवा
होइ छल जइमे मानवक सेवा
बुढ़-पुरानकेँ प्राथमिकता दऽ कऽ
होइ छल हुनक विशिष्ठ सेवा।

चिड़ै केर चहचहाहटमे कहियौ
आकि सुरुजक धाहीमे
सुबह चलल किसान बरद संग
बरदक घन्टीक टन-टनमे।

होइत भोर अस्पताल खुजैत छल
रोगी बैठथिन प्रतीक्षालयमे
महिला-पुरुखक अलग-अलग बनल छल
सुहनगर प्रतीक्षालय बीच प्रांगणमे।

चहुबगली जय-जयकार मचल छल
इलाजक रीति शुभ मधुरमयमे
रोगीकेँ संजीवनी भेट रहल छल
धनबंतरी-सन वैद अमृतमयमे।

किछु बरख जखन बित गेल

गाम-घरसँ बेमारी भागि गेल
डाकडरक अल्ला आ रोगीक हल्लामे
वायरस-बैकटिरिया हवामे उड़ि गेल।

स्वच्छ-सफाइ आ चन्दन छिटकल
डेग-डेगपर इत्र छल बिखरल
सौरभ-सुवास आ सुगन्ध रहै पसरल
अस्पताल झलकैत छल हरपल।

विचित्र घटना-

दीन-दुखिया एक जगू लऽ आएल
जगूक लग ओ नोर बहाएल
कहलैन यौ जगू भैया, सुनियौ
रंग लालक किरदानी बुझियौ।

कर्जा लेलौं हम पाँच हजार
मुदा लिखने अछि सौ हजार
हमसभ कियो ने बुझलौं राज
हमसभ छी तँ अँगूठा छाप।

रंगलाल मड़र बड़ जुलुम करैए
हमरा घरमे ताला लगबैए
दस लठैत आ गूंडा लाबिकऽ
सभ परानीकेँ घरसँ भगबैए।

ओकरेपर पनचैती अछि
धिया-पुता हमर चिन्तित अछि
सभसँ हारिकऽ अहाँ लग एलौं
अहाँकेँ हम धर्मात्मा बुझलौं।

जगूकेँ मानवता घेर लेल
माए जकाँ ममता आबि गेल
सतना मजदूरक बात बुझि गेल
झट-दे जगू पनचैतीमे गेल।

पनचैतीमे चलल खिस्सा-पिहानी
जगू बुझलैन आब भेल मनमानी
पानि पड़ए लगल झड़-झड़
पंच सभ करए लगला धड़फड़।

पनचैती एकतरफा भेल
जगू मड़र अकेला पड़ि गेल
कहलक पंच पैसा सभ लगतह
नहि तँ घर तोहर बन्हकी लगतह।

सतनाकेँ बड़ सताएल गेल
धिया-पुताक आँखि नोरा गेल
जगू बाजल, 'ई पनचैती नहि भेल
सरासरी ई बाहुबलीक खेल।

डायरीमे शूना अछि सटल
आ ऐठामक पन्ना अछि फटल
शंकाक गुनजाइश बड़ अछि
मुंशीकेँ खेला ई अछि।’

रंगलालक आब आँखि भेल लाल
सतनासँ माँगलक एक लाख
सभ पंच तँ अपना घर गेल
मुदा रंगलाल सतनाक घर आबि गेल।

सतना कानए हक्को-बिक्को
कनिया तँ डाकिन बनि गेल
आँखिक नोरसँ धार फूटल तँ
करूणाक सागर बहि गेल।

मोमक दिल तँ पिघैल सकैत अछि
पत्थरक दिल की पिघैल सकत?
रंगलालक पत्थरोसँ करा
दिल केना कऽ पिघैल सकत?

हे प्रभु, ई केहेन लीला!
निर्दोष सतना आब केना बँचत?
घरमे ताला लागि चुकल अछि
घर-हरण ई केना बँचत?

सतनाकेँ अछि दूटा छौड़ी
ओकर इज्जत केना बँचत?
कनिया चलत गली-गली तँ
चीर-हरणसँ केना बँचत?

गुण्डा मवाली बहुबली सभ
गली-गलीमे घुड़ैत अछि
सुन्दर-सुन्दर छौड़ी सभकेँ
अपन शिकार ओ बनबैत अछि।

की ई सम्भव अछि?
तँ किएक अछि?
हँ हँ सम्भव अछि
शीर्ष नेताकेँ छोड़ी दऽ कऽ
गुण्डा मवाली बालात्कारी सभ
अपना संरक्षक बनबैत अछि।

दोहा-
एहेन सत्ता सरकार बनल अछि गुण्डा मवालीक राज
कानूनसँ ऊपर बहुबली आ मुट्ठीमे सरकार।

आब सतनाकेँ की हएत?
बिना ठौर ओ केतए जाएत?
कनियाक तँ बात छोड़ू

ओकर धिया-पुता आब केतए जाएत?

की यौ ई छी द्वापर काल?
मुरलीधारी कृष्णक काल?
जे द्रोपदीक लाज बचौलैन
आ चीरहरणमे चीर बढ़ौलैन।

कनिया चौकैठ सटिकऽ कानए
सतना ताला पकैड़कऽ कानए
सतनाक छौड़ा दुनू छोट
ओकरा लऽ बहिन सभ कानए।

बड़ विचित्र दृश्य बनल छल
करूणाक सागर उमरल छल
गजकेँ ग्राह पकैड़ लेने छल
विष्णुक पुकार मचल छल।

जगू विष्णु बनिकऽ आएल
दुनू परानीकेँ समझाएल
एक लाख रूपैआ दऽ कऽ
धूर्त्त रंगलालक रंग उड़ाएल।

ओइठामसँ जगू घर घुरि गेल
ओकरा तँ भाड़ि चिन्ता भेल
सतनासँ ई गलती केना भेल

औंठा छापक दोख ई भेल।

मिडिल स्कूल बनल-

जगू गाममे बैसार केलैन
सर-समाजकेँ झट बजौलैन
पान-सुपारी छोहारा बाँटि कऽ
अपना मनक विचार सुनौलैन।

‘शिक्षामे तँ गाम अछि पाछू
सुधरत केना विचार सभ बाजू
एकटा हमरो प्रस्ताव अछि मान्यवर
मिडिल स्कूलपर जोर लगाबू।

आठमा तक सभ बच्चा पढ़त
छौड़ा पढ़त छौड़ियो पढ़त
घर-घरमे साक्षरता आएत
औंठा छापकेँ दूर भगाएत।’

समाजक कहब-

जमीन-पैसा ऐमे बड़ लगतह
सर-समाज कहलैन केना हेतह?
जगूक कहब-
‘जमीन-पैसा तँ हमहीं लगाएब
आ सभ मिलि-जुलिकऽ स्कूल बनाएब।’

जगूक बातसँ सभ खुश भेल
सर-समाज सभ आशीष देल
बिहानेसँ मजदूर लागि गेल
पाँच-दस मिस्त्री सेहो लागि गेल।

गामक मजदूर गामक लोक
स्त्री-पुरुख सभ टोलक टोल
धिया-पुता मचौने रहै शोर
आ जगूजीक ऐठाम भोजे-भोज।

जोर-शोरसँ काम भेल
रंगपुर गामक नाम भेल
मिडिल स्कूल चमकल लागल
धिया-पुताक भविस जागल।

जगू देलैन सभ खर्च-बर्च टाका
सभ कियो कहलैन भाग्य-विधाता
उद्घाटनक शुभ दिन निश्चित भेल
जगूसँ सभकियो विचार लेल।

सताएल सतना जगू मन भाएल
सतनाकेँ सभ समाज बुलाएल
शिक्षाक सभ भेद बताएल
महिमा गाबि-गाबि सुनाएल।

हम शिक्षाक महिमा गाबै छी
आ शिक्षाक मसाल जरबै छी
शिक्षा-ज्ञान बिनु भेल छल बानर
जंगल-जंगल भटकए मानव
नाओं पड़ल छल आदि मानव
वनानलक ज्ञान भेलैन तँ
आगिक हुनका खोज भेलैन तँ
बानरसँ बनि गेल ज्ञानी मानव।

कृषिक खोज सेहो केलैन मानव
फल-फलहरी लगौलैन मानव
शिकार युगसँ आगाँ बढ़ल मानव
बानरसँ भेल ज्ञानी मानव
सभ्यता-सभ्यता सजौलैन मानव
बेविलौनक सभ्यता देखियौ
सिन्धुघाटी-सभ्यता सुन्दर पढ़ियौ।

वरदराजक आब बात कहै छी
बिनु शिक्षा केर ओ बरदे छल
संगी-तुरिया बरद कहै छल
स्कूलसँ नित्य भागै छल
रस्तामे पियास लगल तँ
इनारपर ओ पहुँचल छल
रस्सीसँ नहरा गहरा भेल देखि
शिक्षाक महिमा नीक गौने छल

व्याकरणाचार्य बनि शिक्षाक अलख जगौने छल।

बिनु शिक्षाक कालिदासजी
महामूर्ख पण्डित कहाबैत छल
पत्नीक दुत्कार मिलल तँ
कनैत-कनैत बेहाल भेल छल
संस्कृत विश्वविद्यालयमे आबि
भनसियाक काज सम्हारैत छल
मुदा, कर्मक महिमा फलदायी भेल तँ
नव रत्न महापण्डित कहौने छल।

शिक्षाक महिमा गाबै छी
हंसक शिक्षा-वृत्ति कहै छी
दूध-पानिक घोलसँ
केना दूधेटा हंस पीऐत अछि
तहिना, हमर धिया-पुता सभ
सिखैथ मूल-तत्व आ सार
जेना समासमे विभक्ति सन्धिमे विकार।

शिक्षा तँ इजोरिया छी
इजोतेमे सभ किछु देखै छी
बिनु इजोते कहू के देखैत अछि?
शिक्षा तँ ढिबरी, लालटेन, बल्बक इजोत छी।

बेहतर जिनगी जीअब सिखबैत अछि शिक्षा

उचित-अनुचितक पाठ पढ़बैत अछि शिक्षा
रस्तासँ भटकल लोकक लेल
सुन्दर पथक सिजन करैत अदि शिक्षा
शिक्षित जँ छी तँ ऑफिस चलाबू
अशिक्षित भेलूँ तँ महींस चराबू
हम शिक्षाक महिमा गाबै छी
घर-घर शिक्षाक अलख जगाबै छी।

सतनाक हाथमे कैंची देलक
फीता काटि उद्घाटन केलक
गोधूलियोमे चमकल स्कूल
'जगू जनता मिडिल स्कूल रंगपुर'।

दू कालखण्डमे स्कूल चलइ
दिनमे आ रातियोमे चलइ
लड़का-लड़की तँ दिनमे पढ़इ
निक्षर नर-नारी रातिमे पढ़इ।

सबहक लेल बेवस्था भेल
रंगपुर शिक्षाक हब बनि गेल
सबहक लब्जपर क, ख, ग, घ
आ च, छ, ज, झ, क गीत बसि गेल।

अनुशासन संस्कारक रीति

पालन होइ छल मर्यादक रीति
शिक्षक समयपर आबैथ सभदिन
शिक्षार्थीकेँ खूब पढ़ाबैथ नित्य-नित्य।

ओइमे पढ़ह सभ सवैया-ड्योढ़ा
धूर-कट्ठा कनमा-अढ़ैया
हुट्ठा-पहुँचाकेँ गीत बनाबह
दू खाँतसँ पचास धरि सीखह।

जेनरल नॉलेजक तँ बात नहि पुछू
सबहक जीहपर रटल छल
दोसर नगरसँ जे अबैत रहइ
ओकरा सभ हराबैत छल।

गणितमे बुझू कैलकुलेटर बनल छल
गणना यंत्रोकेँ पछाड़ैत छल
गणना मशीन शकुन्तला देवी सन
क्षणमे गणनाकेँ उड़ाबैत छल।

प्रतिभा खोजक प्रतियोगिता करि कऽ
प्रतिभावानकेँ जगू खोजैत छल
ओकरा दऽ कऽ छात्रवृति आ सुविधा
आगाँक शिक्षा लेल रस्ता बनाबै छल।

ज सँ जगू ज सँ जग

ज सँ जलसा ज सँ जग्य
जगूक नाम आब सार्थक भेल
विद्वतजन यौ, ई सभ केना भेल?

बेटो-पुतोहु सभ हरखित भेल
माए-बाबूसँ आशीष लेल
बाबूकेँ बुझलैन धर्म-धुरन्धर
माएकेँ कहलैन विप्र निकन्दन।

जगू कहलक सुनह हौ बौआ
स्कूलकेँ आब सजाबह हौ बौआ
शिक्षाकेँ आर मिठगर बनाबह
ज्ञानक ऐठाम दीप जराबह।

वेद बाजल ई की बात?
समझा कऽ कहू अपन बात
केना शिक्षा आर मिठगर हएत
धिया-पुताकेँ मुँह मधुआइत।

जगू कहलक गाछ लगाबह
स्कूलक फिल्डमे आम लगाबह
मालदह, बम्बइ, अम्रपालीक आम
जरदालू, सिपिया आ दसघारी आम।

लताम, कटहर, अनार लगाबह

मिठगर-मिठगर फल लगाबह
अच्छा नस्लक पपिता सुअदगर
फल लगाबह मिठगर-सुअदगर।

वेद लगौलक आमक गाछ
हर, सोंतीमे सभ रंगक आम
बम्बइ आमक छल अलग कतार
डोमा बम्बइ, नेंगरा बम्बइ आ सोवजा
सबहक छल अलग-अलग बहार।

मालदह-सपेताक पांतिमे
दूधी-सपेता आ डोमा-सपेता छल
मिसरी-सिनुरिया, कृष्णभोगक संग
मोहन भोग, सिपिया आ जरदालू छल।

बिनु इंजीनियर जगू बनल आब
भवन-निर्माता ओ वास्तुकार
मुगलकालीन भव्य इमारत सन
स्कूल सजौलैन ई प्रतिपाल।

समयपर स्कूल समयपर बच्चा
समयपर शिक्षक आ समयपर कक्षा
अहर्निश ओइमे शास्त्रार्थ होइत छल
गणित विज्ञानक सभ पाठ होइत छल।

चित्रांकनक चित्रालय बड़ सुन्दर
स्कूल भीतर प्रयोगशाला अति मनहर
संगीत मनोरंजनक बात की कहब?
मनोरंजन-विभाग सेहो अति सुन्दर।

जेकर डायरेक्टर रामेश्वर प्रसाद मण्डल
गीतकार छल जय प्रकाश मण्डल
सहयोगीमे डॉ. उमेश मण्डल
वादन कलाकार राधाकान्त मण्डल।

सबहक प्रेरणेता श्री जगदीश प्रसाद मण्डल
साहित्य रत्न आदर्श रचनाकार छैथ अही भू-मण्डल
तँ कहू किएक ने विभाग बढ़त?
जेकर सृष्टा रहइ पंच मण्डल।

एक बेर निलेश बी.डी.ओ. आएल गाम
गाम-समाजमे भेल गुणगान
झोपड़ी-खोपड़ी मरैयाक संग-संग
सूची बना कऽ केलैन काज।

माटिक घर आब पजेबा-घर भेल
युक्ति लगाकऽ केलैन काज
झोपड़ी महल आ खोपड़ी भेल बंगला
आ टुटली मरैयाकेँ बढ़ि गेल शान।

निलेश लग माए-बाबू गेल
दुनू मिलिकऽ शुभ आशीष देल
माए कहलैन बड़ निमन कएल
सबहक असरा पुरा भेल।

निलेश बाजल-
'अही सबहक कृपासँ ई सभ भेल
मानव सेवा मनमे पसि गेल
माए-बाबू अहीं दुनू हमर कर्त्ता-धर्ता छी
आ बुझैत छी भाग्य विधाता छी।'

कहलैन माए विचार एक आएल
निलेश बौआ हमर मन अकुलाएल
माए कह तूहीं ई की बात?
मरब आ जीयब तोरे सबहक साथ।

झट रोशनी मुख्य लिंकपर आएल
अपना मनक विचार सुनाएल
बजली, बौआ उमेर हमर देखह
हमरा लाइक काज-धर्म पेखह।

सदाव्रत आश्रम खुजल-

हम चलाएब सदाव्रत-आश्रम
भुखल-दुखलक लेल ई आश्रम

भुखल पियासल लेल भोजन बनत
दुख-दुखियारिक लेल सिद्धत बनत।

कहलैन निलेश माए भेटत मेवा
धर्म-पुण्य आ मानव-सेवा
बिना विलम्ब आब काज बढ़ाबू
सदा व्रतक अहाँ मान बढ़ाबू।

जगू कहलैन हम केलौं तैयारी
डेढ़ बिघामे चहारदिवारी
बीच प्रांगणमे आश्रम बनत
भिख-भिखारिन लऽ आश्रय घर बनत।

दुनू परानी अस्थिर भेल
सर-समाजसँ आशीष लेल
कहलैन सदाव्रत आश्रम चलाबह
मिथिला संस्कृतिक गौरव बढ़ाबह।

सर समाज कहलैन ई घीओसँ चिक्कन
दुनू परानीक ई विचार छह निमन
हम सभ मिलि अभिनन्दन करै छी
साए-साए बेर सलाम करै छी।

'रोशनी सदाव्रत-आश्रम बनाबू
रंगपुरमे मेला लगाबू

जे रंगपुर आदियेसँ छल बेदरंग
ओइमे मिलि सदाव्रत लगाबू’।

जोर-शोरसँ पुन: काज भेल
रोशनी सदाव्रत आश्रम रंगपुर खुजि गेल
चारू तरफ मृदंग बजि गेल
रोशनी आ जगूक जय-जयकार भेल।

सुबहसँ लऽ कऽ साँझ धरि
रोशनी सदाव्रत बाँटै छल
तन-मनसँ आ धनसँ सेहो
आश्रम नित्य चलबै छल।

ने जाति-धर्म आ ने सम्प्रदाय-पंथ
ने छुआछुत सेवा आश्रममे छल
स्वयं रोशनी अपने हाथसँ
दाना-पानी बाँटै छल।

बाड़ीक पटुआ तीत होइए
आ दूरक ढोल सुहावन
दीपक लौ ऊपर जाइत अछि
तरमे अन्हरियाक आगमन।

लगक लौकक जे बात होउ
मुदा दूरक लोकक रहै छल भीड़

दिन रविवारक गप्प की कहब
सदाव्रतमे भेटै छल खीर।

एक दिन एगो भिखमंगा आएल
एगारह बरख उमेर छल पायल
रविवारक दिन छल सुन्दर
ओहूमे खीर भोजन सुअदगर।

भरि छीपा खीर भिखमंगा खेलक
रोशनी देवीकेँ झूकि गोर लागलक
ओकरा गरदैनपर रहै मस्सा
एक पुरुख पकड़लक गट्टा।

हाँ-हाँ-हाँ-हाँ ई की भेल?
सेवाव्रत आश्रममे शोर मचि गेल
रोशनी देवीकेँ कहलैन सभ लोक
हिरवाक ई बेटा बनल छल बकलेल।

चारि बरख भेलापर हेराए गेल
जखन मेलामे अन्हर आबि गेल
आइ संजोगे ई आश्रममे आबि गेल
एकर बाबुओ संयोगे आबि गेल।

रोशनी सदाव्रती पुछलैन, ई केना?
ई पहचान बनौलैन केना?

कहलक हिरबा देखियौ मस्सा
तहिना हमरो गरदैनपर मस्सा।

बात सभ प्रमाणित भेल
हिरबाक हेराएल बेटा मिलि गेल
पुरनक माए दौड़ल आएल
रोशनीक पैरपर ओंघराएल।

दोहा-
बिछुड़ल लेरू देखिकऽ गाए जहिना हुकरैत अछि
तहिना पुरनकेँ देखिते खुशीसँ माए सिसकैत अछि।

दुनू परानी कहलैन कर जोड़ि
रोशनी देवी गोड़ लगै छी तोर
अहीं हमर लक्ष्मी आ सरस्वती
काली दुर्गा आ भगवती। ❑

चारिम पड़ाव

जगूकेँ धियानमे आब चन्दा आएल
बेटी-जमाएकेँ घर बजाएल
चन्दा रहैन तँ नि:सन्तान
हरदम रहैन उदासे-उदास।

बेटी-जमाएकेँ नौकरी नइ भेल
ओकर जीवन तँ ओझराइये गेल
मुदा दुनू रहैन स्नातक पास
जोग आओर मिलनसार।

तँए प्राइवेट टिशनक रहै भीड़
आ दुनू परानी भेल छैथ स्थिर
बेरोजगारीक निदान होइ छै
आ जीवन-यापन ठीकसँ चलै छै।

अपन नैहिरा चन्दा आएल
संग-संग जगूक जमायौ आएल
चरण छुबि प्रणाम केलक
आ दुनूकेँ सरपर जगू हाथ देलक।

कुशल मंगल तँ रहै गड़बड़

देह-गात सेहो रहै जर्जर
मन चिन्तासँ रहै भरल
अस्थि भेल रहै पंजर।

जगू कहलैन ई की भेल
हमरा चन्दाकेँ तँ ग्रहण लगि गेल
कहलैन बेटीसँ धीरज राखह
चिन्ता छोड़ि तूँ चिन्तन करह।

हम तोहर करब प्रतिपाल
जखन किस्मत तोहर नइ देत साथ
होइत विहान होस्पिटल आएल
चन्दाक मनमे खुशी समाएल।

बाबूयेक होस्पिटलमे भर्ती भेल
सभ डॉक्टर चन्दाकेँ आशीष देल।
चन्दाक इलाज जोर-शोरसँ भेल
ओकरामे जल्दीए सुधार भेल।

दुनू परानीक जाँच छल भेल
पुरुषो सीमेनक परीक्षण भेल
कहलैन डॉक्टर मेजर नहि मैनर बात
दवाइ खाए पड़त तत्काल।

सातमा दिन पुन: टेस्ट हएत

तखन बुझब हम की भेल।

चन्दा कुमारी उर्फ चन्दा देवी अप्पन पतिकेँ
संग-संग डॉक्टरलॉजीक लेल पुन:
सातमा दिन टेस्ट देलैन-
सातमा दिन जखन आबि गेल
दुनू परानीक हुदहुदी पसि गेल
दिलक धड़कन सेहो बढ़ि गेल
निगेटीव आ पॉजीटीवक वेग बढ़ि गेल।

उदास मनसँ होस्पिटल आएल
अंग-अंगमे कपकपी छाएल
डॉक्टर अप्पन लगेलखिन अल्ला
देखलैन छाती आ देखलैन गल्ला।

कहलक ई अछि सिम्पल बेमारी
तेकरे पहाड़ सन बनेने छी भारी
डागडर खुऔलखिन विटामिन वी-सी-डी-ई
प्रोटिन मिनरल्स आ शुद्ध घी।

डागडर नुस्का तैयार केलैन
दुनू परानीकेँ समझौलैन
भिनसरमे ई खाली पेट खाएब
साँझोमे खाली पेट खाएब।

अश्वगंधा पाउडर दूध संग लेब
शतावरी पाउडर सात दिन लेब
शीलाजीत रसायनक सुनू गुण
ऐ मे बुझियो कामदेवक गुण।

माँसाहारी छी तँ माछ खाउ
आ समय-समयपर अण्डा खाउ
शाकाहारीक लेल सेब रहत ठीक
सोया कटहर तँ राति करत रंगीन।

भिण्डीक टुसा आ नारियरक पानि
सुआ मेथीक साग आ मेथियेक पानि
अपना स्वास्थ्यपर खियाल राखब
जे बताबै छी से जोगासन करब।

साए दवायक एगो संयम होइत अछि
जे नइ करत से बेमार होइत अछि
एक मासक ई दवाइ दइ छी
नुस्का आ किछु चूर्ण दइ छी।

दवाइ खा कऽ पुन: आएब
आ सभ परिवर्तन हमरा सुनाएब
तरूणजी, अहाँ नहि करू चिन्ता
जुआन-जुआन छी जल्द होएब अच्छा।

मास धरि दवाइ खेलक
आ दुनू परानी अचरज केलक
जगूक जमाएमे परिवर्तन भेल
चन्दा देवी बड़ खुश भेल।

दुनू परानी पुन: टेस्ट देल
डॉक्टर कहलैन अति निमन भेल
ई तँ रहै शुभ संकेत
नूतन इलाजक नूतन सन्देश।

दवाइ केलक गुण रामवाण जकाँ
काज निमन संजीवनी जकाँ
डॉक्टर उमेशक भेल गुण-गान
आ वैद्य धन्वतरी जकाँ मान।

चन्दा अपना माए लग लऽ गेल
नारी-स्वभावक राज कहि देल
नारीक लाज तँ दुनियाँ जानै
नारी तँ सिर्फ नारीकेँ बतलाबै।

जगू रोशनी बड़ हरखित भेल
बेटी-जमाएकेँ शुभ आशीष देल
लागल जेना सभ ग्रह कटि गेल
चाँदसँ आब चन्दग्रहण छुटि गेल।

समय निरमोहिया बढ़ैत गेल
चन्दा देवी आब गर्भवती भेल
समयपर बच्चाकेँ जन्म देल
लाल टुह-टुह ओकरा बच्चा भेल।

बच्चा सुन्दर छौड़ा भेल
आ अँगना-घरमे खुशी भरि गेल
झट छठियारक राति आएल
आशा कर्ता खुशीसँ आएल।

बाजल तानपुरा बजि गेल ढोल
रोशनीक अँगनामे भेल अनघोल
सभ डॉक्टरकेँ निमंत्रण देल
सर-समाजकेँ सेहो पठा देल।

स्त्रीगणक पुन: भाग्य जगि गेल
साड़ी-धोती चद्दैर मिलि गेल
सभ गौलैन छठियारक गीत
हरखित मनसँ मंगल गीत।

रामेश्वर मण्डल गुरुजी आएल
आ हरमुनियापर बधैया गाएल
सदा आनन्द रहै एहि दोआरे
हरदम लगे जय-जयकारक नारे।

दुनू परानी कोनो ने कमी केलक
भरि हीछ सभकेँ भोज खुऔलक
जगू तँ दानवीर कर्ण बनि गेल
रोशनी सेहो पद्मावती बनि गेल।

आ दुनू परानी मिलि खूब केलैन दान
सबहक दुनू रखलैन मान
जगूसँ सभ कहलैन आब राखू नाम
अपना नाइतकेँ चिक्कन नाम।

बच्चाक मुँह छल चन्दाकार
तँए नाम रखलैन बिन्दु सार
जगू पढ़ने छल इतिहास
मौर्य वंशक सुन्दर इतिहास।

चन्द्रगुप्त मौर्यक बेटा विन्दुसार
तेकरे बेटा सम्राट अशोक महान
किछु हुअ नाम, भेल बिन्दुसार
जगू आ रोशनीक भेल जय-जयकार।

अस्पतालक डॉक्टरकेँ जगू बजौलैन
पाँचो टूक कपड़ासँ सम्मानित केलैन
सभकेँ देलखिन कंचन घड़ी
किएक तँ आएल रहै सुखद शुभ घड़ी।

किछु दिन जखन बित गेल
घर अँगना पुन: स्थिर भेल
जगू कहलैन चन्दासँ
आ अपन जमाए राजासँ।

अहाँ सभ आब केतउ ने जाउ
जगू जनता मिडिल स्कूल रंगपुरमे पढ़ाउ
सर समाज कहलैन ई अति सुन्दर काज
अहीं छी ऐ धरतीक पुरुषोत्तम राम।

वेद कहलक एक पुस्तकालय दइ छी
सभ विषयक किताबक संरक्षक दइ छी
ऐ स्कूलमे सार्वजनिक जनता पुस्तकालय लगाबू
सभ शिक्षार्थीक लेल साहित्यकारक कृति सजाबू।

छठि बिहारक छी मुख्य पाबैन
भुवन-भाष्करक ई पाबैन
ऐ पाबैनक महिमा अछि भारी
छठि मैयाक पुजतीह नर-नारी।

आन्हरकेँ माए आँखि दैत छैन
कोढ़ियाकेँ काया दइ छैन
नेंगराकेँ चलैक शक्ति दइ छैन
बाझिनकेँ सन्तानो दइ छैन।

ई आस्था आ विश्वासक पर्व छी
व्रतीक लेल आत्मशुद्धीक पर्व छी
प्रकृतिकेँ जल स्त्रोतमे होइबला ई पर्व छी
बेसी श्रद्धा आ विश्वासक पर्व छी।

ई नहाइ-खाइसँ शुरू होइत अछि
दोसर दिन खरना होइत अछि
तेसर दिन सूर्यदेवक सौंझुका अर्घ
आ चारिम दिन भोरुका अर्घ।

ऐ महान पाबैनमे व्रतीक परीक्षा होइत अछि
श्रद्धा-आस्थाक कठिन परीक्षा होइत अछि
छठि माइक डाली बड़ भारी
ओइमे सजाबैथ व्रती नर-नारी।

ठकुआ-भुसबा केरा आ नारियर
सेब-सन्तरा आ नासपती हरियर
प्रकृति पूजामे प्रकृतियेक सामान
श्रद्धासँ सजाबैथ सुपारी आ पान।

डलिया सजाकऽ लेथिन माथ
छठिक गीत गाबि-गाबि चलथिन घाट
पानिमे ठाढ़ भऽ कऽ अर्घ देथिन
भक्ति-भावसँ अर्चना करथिन।

अप्पन सुहागक विनती सुनौथिन
धिया-पुताक लेल वरदान माँगथिन
सात घोड़ाक रथसँ छठि मैया औथिन
व्रती सबहक मनसा पुरौथिन।

छठि पाबैनमे सभ बेटा घर आएल
संग-संग रोशनीक पुतोहुओ आएल
दुनू परानी बड़ खुश भेल
सभकेँ तन-मनसँ आशीष देल।

माय-बाबूसँ बाजल देव
अहाँक दर्शन लेल छेलौं व्याकुल भेल
मुदा ऐ बीच मधुबनीमे रहए एक टुर
मधुबनी पेंटिंग-प्रशिक्षण टुर।

कहलैन जगू बौआ देव कुमार
बड़ नीक टुर छेलह सुधाक समान
ई पेंटिंग तँ मधुबनीक धरोहरक समान
की मिथिला एकरा आब जनैत अछि जहान।

बौआ सुनह ओकर केना विकास भेल
जखन राम सीताक मिथिलामे बिआह भेल
राजा जनकजी स्त्रीगणकेँ बजाएल
ओकरे हाथसँ बिआहक चित्र बनाएल।

सुन्दर पेंटिंगसँ कोहवर सजाएल
राजा जनक हीरा मोती लुटाएल
1934 इस्वीमे एकर खोज भेल
आ मधुबनीमे घरक भितरी दीवलपर भेट गेल।

मधुबनी पेंटिंगक आइ तुती बजैत अछि
देश-विदेशमे डंका बजैत अछि
स्त्रीगण ऐमे अछि सभसँ आगाँ
तइ संग-संग पुरुखो सभ आगाँ।

मधुबनी पेंटिंग मधुबनी टीशनक पहचान
संग-संग दरभंगा-पटनाक सेहो निशान
देव कहलक ई टुर नीक भेल
पैघ-पैघ आ महान कलाकारसँ परिचय भेल।

रोशनी अपन पुतोहुक सत्कार केलैन
पोता-पोतीक गोदी उठौलैन
सभकेँ अपना शुभ आसिरवाद देलैन
जगूओजी अप्पन हाथसँ आशीष देलैन।

जेना लगैए कोनो वगिया गमकल
मजूर नाचल आ बुलबुल चहकल
ओइ बगियाक सभ फूल-फुलाएल
दिनमे होली आ राति दिवाली मनाएल।

छठि पाबैन-

झट जगूजीक सभ पुतोहु आएल
छठी मैयाक डोली सजाएल
पहिने कुरनी-कोशिया लाएल
आ ओइमे ठकुआ-भुसबा सजाएल।

केरा सेब आ पान-सुपारी
अरघौती बद्धी नीकसँ सजौलक
ऊपर आमक पल्लव दऽ कऽ
आ चहुमुखी दीप सकली जरौलक।

दोसर बेर शुभ कोशिया लेलक
तइमे ठकुआ-भुसबा देलक
अरघौती बद्धी, पान-सुपारी
संग-संग अरबा चाउर लेलक।

तेसर खेप कोनियाँ लेलक
ठकुआ भुसबा आ उखि देलक
पत्ता सहित मुरै, हरदी देलक
प्रकृतिक फड़ सभ ओइमे देलक।

सूप सजौलैन ठकुआ-भुसबासँ
केरा आ सजमनि संतरासँ
पत्तादार मुरै हरदी-आदी दऽ कऽ

आ उखि, सेब, सिंगहारासँ।

दूटा ढकना रहै अतिसुन्दर
कुम्हारक पकाएल रंगत लाल
आ ओहोमे सजौलक ठकुआ-भुसबा
केरा अरघौती आ सुपारी-पान।

महौत मिलत तँ हाथी झूमत
बच्चा सभ सुड़ देखि कऽ रोबत
हाथी, विशाल एक पशु छी मित्र
बच्चा सभक लेल ई विचित्र।

माटिक हाथी वीणा लाएल
बच्चा सबहक मनमे भाएल
हाथीक भीतर ठकुआ-भुसबा
आ पान-सुपारी, केरा सजाएल।

ऊपर आमक पल्लव दइ कऽ
चहुमुखी पावन दीप जरौलक
आब बच्चा सभ हँसए लागल
हाथी देखिकऽ नाचए लागल।

एगो बड़का दउरा सोहनगर
कोशिया, कोणियाँ, सूप, ढकना देल अन्दर
तइमे बड़का-बड़का नारियल

पतादार आदी, हरदी, मुरै हरियर-हरियर।

केराक घौड़ पैघ-पैघ नमहर
स्त्रीगण सजौलक दउरा सुन्दर
एक बात कहब हम वन्धुवर
मनसँ व्रती सजौलैन सुन्दर।

मुदा कहब हम छठि व्रत अछि भारी
केतबो सजाएब तँ एकटा छुटिये जाएत हे नारी
तैयो सभ मिलि डाली सजौलक
छठिक घाटपर डाली पहुँचौलक।

चकमक-चकमक डाली करए
चहुमुखी दीप भुक-भुक जरए
सभ पहुँचलैथ आब छठिक घाट
माए-बाबूकेँ लऽ कऽ साथ।

सकली गबैत रहैथ छठि माइक वन्दना
संग-संग स्त्रीगण आ पुतोहुओ वीणा
जगुजीक ई वन्दना मनमे भाएल
कहलैन पुतोहुसँ बेटा हमर मनमा जुड़ाएल।

पुतोहु बाजली, पापा ई मैथिलीमे गीत
मैथिलीमे रचल ई मण्डलक गीत
सुनू यौ पापाजी ई वन्दना गीत

मम्मी अहूँ सुनू छठी मैयाक गीत।

छठी वन्दना-

जय-जय भवानी अशुभ विनाशनी
संकट मोचनी माता
सदा सुखद वर दिअ हे छठी मैया
विपैत हमर हरू माता।

स्वर्ण वरण आ नेत्र मृगनयनी
कंचन वदन आ काया
चकमक-चकमक मुकुट सुहाविनी
रवि रश्मि सन काया।

सात अश्वक बनल रथपर सवार छी
भुवन भास्करक प्रति छाया
सभ व्रतीकेँ सनाथ करै छी
कोढ़ियोकेँ दइ छी काया।

अहाँक महिमा जगमे अछि न्यारी
गबैत अछि नभहक तारा
नभहक चन्द चमैक-चमैक कऽ
मांग भरैत अछि सितारा।

वेद पुराणो गुण गबैत अछि

ऋषि-मुनिक एकतारा
नारदजी वीणा बजा-बजा कऽ
महिमा बताबैथ सारा।

ठकुआ-भुसबा आओर नारियर सभ
मिठगर फल पाकल केरा
जल बीच ठाढ़ भऽ अर्घ हम दइ छी
पार करू मण्डलक बेरा।

छठि गीत-

स्त्रीगणक समवेत स्वरमे-
छठी मैया एलखिन गंगाघाट पायल रूण-झुण बाजै हे।
हेऽऽऽ रूण-झुण बाजै हे घुँघरू छम-छम बाजै हे।।
रथ पर सवार मैया, ज्योतिसँ दमके मैया
से चम-चम चमके हे मैयाक लिलराक बिन्दिया
से चम-चम चमके हे।।
भोली-भाली महिमा अछि न्यारी
करै अछि भुवनक रखबारी
से खन-खन बाजै हे, मैयाक हथवाक कंगना
से खन-खन बाजै हे।।
जल बीच ठाढ़ व्रतहारी, अर्घ चढ़ाबे नर-नारी
केलबा चढ़ाबे व्रतधारी, ठकुआ चढ़ाबे नर-नारी
भुसवा चढ़ाबे व्रतहारी नारियर चढ़ाबे नर-नारी
से मैया पुरा केलखिन हे, सबहक मनमाक असरा

से पुरा केलखिन हे।।
बाझिन-अबला पुकारे, दूधबाक धार चढ़ाबे
से मैया ओकरो देलखिन हे, सुन्नर गोदीक
ललना से ओकरो देलखिन हे।।
महिमा अछि बड़ भारी जगतमे
मण्डलजी आयल अछि शरणमे
से विपदा हरियो हे छठी मैया हे
सुनियौ हमर अरजिया
माँ संकट हरियौ हे।
हेऽऽऽ रूण-झुण बाजै हे घुँघरू
छम-छम बाजै हे, छठी मैया...।

छठि घाट परहक सभ लोकैनकेँ संग-संग दुनू परानी जगू-रोशनी दुनू गाएल गीतकेँ पसिन केलैन आ मनसँ आशीष देलैन। घाटपर जय-जयकार मचि गेल।

सुरुजदेव एक साक्षात् देवता
ऐ धरतीपर आओर साक्षात्देव के?
सौंझुका अर्घ सुरुजदेवकेँ देल
छठि घाटपर जय-जयकार भेल।

दोसर दिन भोरुका अर्घक बेर
सभकियो पहुँचल छल भेल
पुरब दिशा जखन लाल भेल
छठिव्रतीक लेल शुभ संकेत भेल।

अर्घक काज आब चालू भेल
गीत-नादसँ छठिक घाट भरि गेल
बाजा अलगे करए अनघोल
बजनिया, पिपही आ बजबे ढोल।

तैबीच एगो घटना घटल
एगो छौड़ी घाटेपर खसल
गरीब घरक उ छौड़ी छल
मइटुग्गर आ बपटुग्गर सेहो छल।

उमेर छौड़ीकेँ अठारहमा छल
मुदा गरीबीसँ जर-जर छल
ओ छल बिलकुल अनाथ
बकरी चरा कऽ करए अपन भूखक निदान।

ओकरा लगल छल नमहर दाँती
आ सभकियो पुछै छल ओकर जाति
सहानुभूतिक चर्चा नइ छल
धरतीपर पड़ल ओ मरणासन्न छल।

दोहा-
जाति, धर्म आ भेदभावसँ, टुटैत अछि मानवताक गाछ
इंसान नइ हैवान रहत तँ, खण्ड-खण्ड होएत समाज।

छौड़ीक ई हाल देखि आबि गेल ममता
रोशनी सदाव्रतीकेँ माए जकाँ ममता
झट ओकरा असपताल लऽ गेल
जाति-धर्म सभ पछुआ गेल।

रोशनी असपताल रंगपुरमे भर्ती भेल
दुइये दिनमे स्वस्थगर भऽ गेल
कहलैन डॉक्टर एकरा एनेमिया अछि
आ खून चढ़ाबैक खगता अछि।

जगूजी कहलैन ब्लड ग्रूप हम दइ छी
सभ बेटा-पुतोहुक सेहो ब्लड हम दइ छी
ब्लड-ग्रूपक झट जाँच भेल
निलेश बी.डी.ओ.क ब्लड प्रमाणित भेल।

कहलैन जगू निलेश बौआ
आगाँक धर्म बताबह बौआ
माए-बाबूक राज निलेश बुझि गेल
प्रखण्ड विकास पदाधिकारीक रोआब बिसैर गेल।

निलेश अप्पन माए-बाबूकेँ कहलैन
सेवा-धर्मक बात सभ कहलैन
मानव-सेवासँ आओर अछि की सेवा?
सभसँ बढ़िकऽ इंसानक पूजा।

हमरा ब्लडसँ जँ ई स्वस्थ हेती
ई अनाथ लड़की जँ सनाथ हेती
तँ बुझब हम छी अहीं सबहक सन्तान
एकरा लेल ब्लड की, देब अप्पन जान।

डॉक्टर फेर लगौलक अल्ला
देखलैन छाती आ देखलैन गल्ला
लड़कीकेँ ब्लड चढ़ौल गेल
ओकरा देहसँ दुख भागि गेल।

जगूजीक परिवार रहै मानवताक पुजारी
निलेशक बिआहक केलैन तैयारी
सर-समाजकेँ हकार देलैन
ओही लड़की-संग बिआह कऽ देलैन।

जे हौउ, कहब तँ ई छठि माइक महिमा
जगू परिवारक, अइमे की महिमा?
खटरीकेँ दुल्हा बी.डी.ओ. मिल गेल
चेरीसँ खटरी रानी बनि गेल।।

खटरीक आँखिसँ नोर गिर गेल
बजली हमरा माए-बाबू मिलि गेल
ऐ धरतीक के छी भगवान?
इंसान गढ़ैए जे वएह भगवान।

अस्पतालमे प्रीति भोज भेल
दुल्हा-दुल्हिनकेँ सभ आशीष देल
सभ कहलैन ई अद्भुत इतिहास बनि गेल
जगू-रोशनीक पुन: जय-जयकार भेल।

एक उपवनमे रंग-रंगक
फूल माली लगौने छल
उज्जर-कारी आ श्याम वर्णक
गुलाबी रंगक सुमन सजौने छल
बेली-चमेली-जूही आ मोतीक झाबा
बाहि कतारमे गमकैत छल
आ ई कहि रजनीगंधा बिखरै छल
बीचमे छल सिंहारक फूल
आ पलासक सुगन्ध सुवाहन छल
पियर-पियर गेन्दाफूलक
आ गुलाबक छबि मनभावन छल
मह-मह-मह-मह बाग करए नित्य
उपवनमे आएल बहार छल
मुदा जखन बिहाड़ि आएल तँ
फूल-फूल सभ मुरझाएल छल
बिहाड़िक ई लीला देखिकऽ
मालिक हाल तँ बेहाल छल
तीर जेना शरबनकेँ लागल
दशरथक शब्दवेदी वाण
माए-बाबूक हाक लगौलक

मुदा अचुक ओ हरलक प्राण
तहिना सन माली कुहरैए
सुमन-सुमनपर रखत धियान
बाबूक मलार दुलारकेँ पढ़लक
जे पढ़त से चतुर सुजान।

❑ ❑ ❑
❑❑
❑

Notes

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....